गौतमी, सावित्री फुले और

महाप्रजापती गौतमी

जुही

आज तक हम गौतम बुद्ध की ही बात करते आए हैं। बौद्ध धर्म की स्थापना और उसे प्रचलित करने का श्रेय उन्हीं को जाता है। बौद्ध धर्म में शुरु में औरतों को जाने की इज़ाज़त नहीं थी। मठों में औरतों की भागीदारी और बौद्ध धर्म ग्रहण करने की इज़ाज़त पाने के लिए 2500 साल पहले औरतों को काफी संघर्ष करना पड़ा और इस संघर्ष की शुरुआत और इसका संचालन किया महाप्रजापती गौतमी ने। आइए आज उनके बारे में जानें और बात करें।

गौतम बुद्ध का बचपन का नाम राजकुमार सिद्धार्थ था। अपने पिता राजा शुद्धोधन की एकमात्र संतान। पैदा होने के एक हफ़्ते बाद ही सिद्धार्थ की माता का देहान्त हो गया। तब राजा शुद्धोधन ने दूसरी शादी की, प्रजापति गौतमी से। गौतमी ने बालपन से ही सिद्धार्थ की देखभाल सगी मां की तरह की। सिद्धार्थ को वह अपने बेटे नंद से भी ज्यादा प्यार करती थी और सिद्धार्थ ने भी कभी उन्हें अपनी सौतेली मां नहीं समझा।

राजा शद्धोधन की मौत के बाद गौतमी ने बौद्ध धर्म की विधिवत पढ़ाई की। धर्म की अच्छाई/बुराई समझने और उस पर अमल करने की कोशिश की। तब तक उन्हें यह एहसास नहीं था कि बौद्ध धर्म भी औरतों को मर्दों के बराबर का दर्जा नहीं देता। इसी भ्रम में उन्होंने गौतम बुद्ध के लिए एक चोगा तैयार किया। यह चोगा वह गौतम बुद्ध को पांचवे "वासन" की समाप्ति पर भेंट करना चाहती थीं, पर वैशाली के महोत्सव पर जब गौतम बुद्ध ने वह चोगा लेने से इंकार कर दिया तब गौतमी भौचक्की रह गई। बार-बार आग्रह करने पर गौतम बुद्ध ने बताया कि औरत का बनाया चोगा वह ग्रहण नहीं कर सकते। चाहे फिर वह औरत उनकी मां ही क्यों न हो। गौतमी बेहद दुखी हुई। इसलिए नहीं कि उनके बेटे ने उनकी भेंट स्वीकार नहीं की बल्कि इसलिए कि औरत और मर्द के दर्जे में फ़र्क की उम्मीद बुद्ध से नहीं की थी पर फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी और फ़ैसला किया कि चोगा बुद्ध को देकर ही रहेगी चाहे उसके लिए उन्हें जो भी प्रयत्न करने पड़ें।

आखिरकार गौतमी विजय हुई। बुद्ध ने चोगा स्वीकार किया पर केवल अपने लिए नहीं। उन्होंने

अड़ीज़न–तीन जुझारू औरतें

कहा कि चोगा महासंघ को भेंट किया जाए। महासंघ में चारों दिशाओं से भिक्षु आते थे। ऐसे इस चोगे को काफ़ी लोग इस्तेमाल कर पाएंगे। यह गौतमी की एक बहुत छोटी सी जीत ही सही, पर जीत तो थी।

भिक्षुणी संघ

प्रजापति गौतमी की महत्वाकांक्षा यहीं आकर खत्म नहीं हुई। धीरे-धीरे उन्हें बौद्ध धर्म की तमाम सच्चाई का एहसास हुआ। उन्हें लगा जीवन का सही अर्थ सेवा में ही है। तब उन्होंने अपना जीवन संघ की सेवा में लगाने का संकल्प किया।

तब तक औरतों के लिए किसी भिक्षुणी संघ की स्थापना नहीं हुई थी। बौद्ध धर्म के अनुयायी मानते थे कि संघ में औरतों के आने से मर्दों का नैतिक पतन हो जाएगा। वह पूरी तरह से धर्म की सेवा नहीं कर पाएंगे। शुरूआत में तो गौतमी ने बुद्ध की मिन्नतें कीं कि औरतों को संघ की सेवा का मौका दिया जाए पर बुद्ध ने साफ़ इंकार कर दिया। तब गौतमी ने प्रतिरोध किया। अपने सर के बाल मुंडवा दिए। पीला चोगा धारण किया और कुछ औरतों को साथ लेकर कपिलवस्तु से वैशाली तक पदयात्रा की। बुद्ध उस समय महावन में रहते थे। महावन के द्वार पर खड़े होकर दिन-रात घोर तपस्या की। तब भी बुद्ध नहीं पिघले। तब उन्होंने ज़ोर से बुद्ध और संघ के दूसरे भिक्षुओं को फटकारा। कहा कि तुम लोग भगवान को पाने निकले हो पर भगवान तुम्हें नहीं मिलेंगे। तुम संसार और भगवान की रचनाओं का मोह नहीं छोड़ पाए, डरपोक हो। अपने स्वार्थ के लिए औरत को पतन का द्वार कह रहे हो। यह तुम्हारी हार है। इस फटकार का सभी पर बहुत असर हुआ। शर्मिंदा होकर बुद्ध और उनके साथी आनंद ने माफ़ी मांगी और तब भिक्षुणी संघ की स्थापना हुई।

जैसे-जैसे वक़्त बीतता गया संघ बड़ा होता गया। काफ़ी औरतें इसमें शामिल हुईं। इनमें से कुछ ने काफ़ी साहित्य, गीत, कथाओं की रचना की। खेमा व उपल्वन इस संघ की दो प्रमुख रचनाकार थीं।

इस भिक्षुणी संघ की स्थापना से औरतों को काफ़ी फ़ायदा हुआ। बुद्ध से पहले औरतों को केवल किसी की मां, पत्नी, बेटी, बहन के रूप में देखा जाता था, पर अब उनकी अपनी एक अलग

पहचान थी। इस संघ में ऊंच-नीच के भेदभाव की कोई जगह नहीं थी। यहां राजकुमारी, दासी, विधवा, शादीशुदा औरतें, एक जगह रहती थीं। एक साथ पूजा करती थीं, एक साथ खाना खाती थीं। यहां पर ऊंच-नीच धर्म में उन्नति के मापदण्ड से नापी जाती थी। दौलत से नहीं। संघ में ही रहते रहते कुछ भिक्षुणियों ने "थेरी गाथा" की रचना की। थेरी गाथा यानि बौद्ध भिक्षुणियों के गीत। इन गीतों में यह भिक्षुणियां अपने जीवन के सुख-दुख, खुशी, रोष, गम, संघर्ष आदि के किस्से बयान करती थी। भिक्षुणी संघ की स्थापना से औरतों के दर्ज़े में सुधार हुआ। लोगो को औरतों के महत्व का एहसास हुआ। उन्हें सम्मान और उनका सही स्थान मिला और इस तरह 2500 साल पहले समाज में औरत को उसका सही दर्जा दिलाने का श्रेय प्रजापति गौतमी को जाता है। अगर गौतमी संघर्ष नहीं करती तो आज भी मठों, संघों और बौद्ध धर्म के इतिहास में औरतों का नामोनिशान नहीं होता और वह सदैव मर्दों की छत्र-छाया में ही जीती रहती। गौतमी के प्रयास से औरतों को सदियों पहले खुले वातावरण में जीने का मौका मिला। आज़ादी मिली और अपने मन की करने का हक़ मिला। आज प्रजापति गौतमी जीवित नहीं है। शायद बहुत लोग उनके बारे में जानते भी नहीं है। इस छोटे से लेख के ज़रिए हम उन तमाम औरतों को याद करके, श्रद्धा अर्पित करना चाहते हैं जिनको इतिहास में उनका यथास्थान नहीं मिला है। □

आओ बहनें एक हो जाएं
धर्म, जाति का भेद मिटाएं।
मिलकर महिला दिवस मनाएं
अधिकारों की आवाज उठाएं।